Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 5

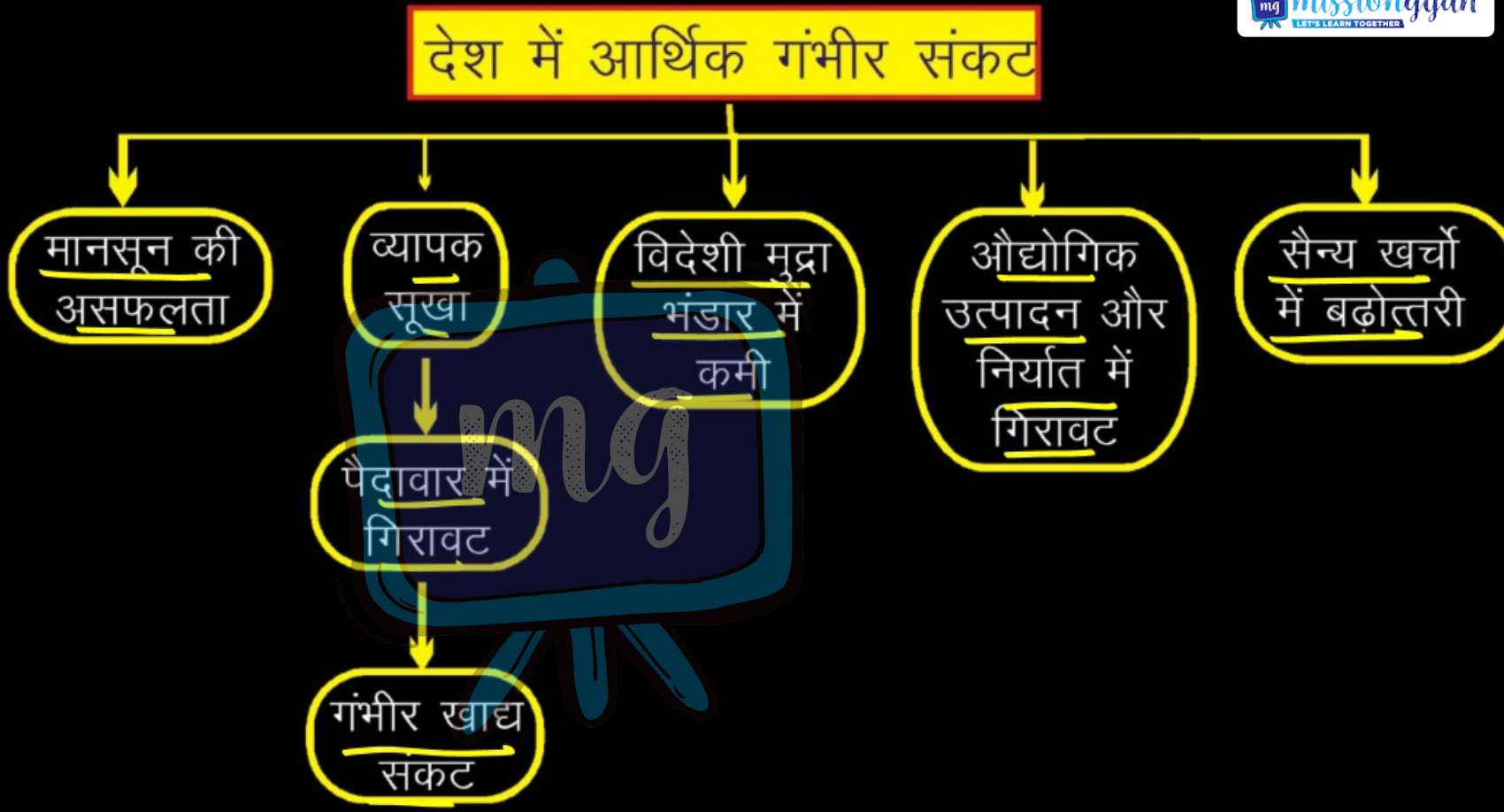
कांग्रेस प्रणाली चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना

भाग - 2

Satyaveer Yadav

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



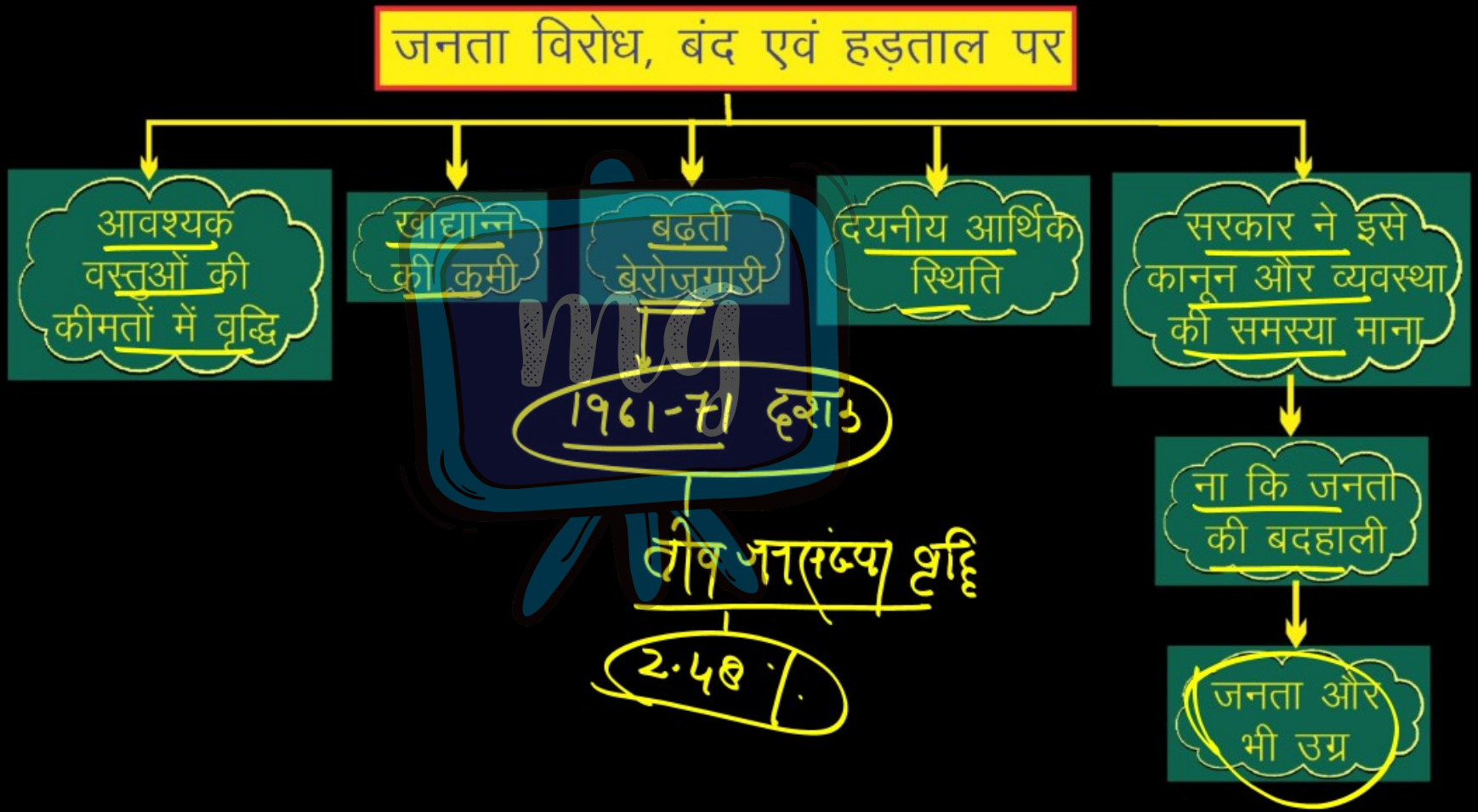
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- देश की विकट आर्थिक स्थिति।
- इंदिरा गांधी सरकार के शुरूआती फैसलों में एक रूपये का अवमूल्यन करना।
- पहले 1 अमरीकी डॉलर की कीमत 5 रूपये जो अब बढ़कर हो गयी = 7 रूपये।
- आर्थिक स्थिति की विकटता के कारण कीमतों में तेजी से इजाफा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

CPI-M

1964

श्रीपद अमृत डांगे
डॉ. ज्योति बसु

- साम्यवादी और समाजवादी पार्टी ने व्यापक समानता के लिए संघर्ष छोड़ दिया।
- मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से अलग हुए साम्यवादियों के एक समूह ने मार्क्सवादी - लेनिनवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी बनाई और सशस्त्र कृषक विद्रोह का नेतृत्व किया।
- इस पार्टी ने किसानों के बीच विरोध को संगठित किया।
- इसी अवधि में गंभीर किस्म के हिंदु -मुस्लिम दंगे।

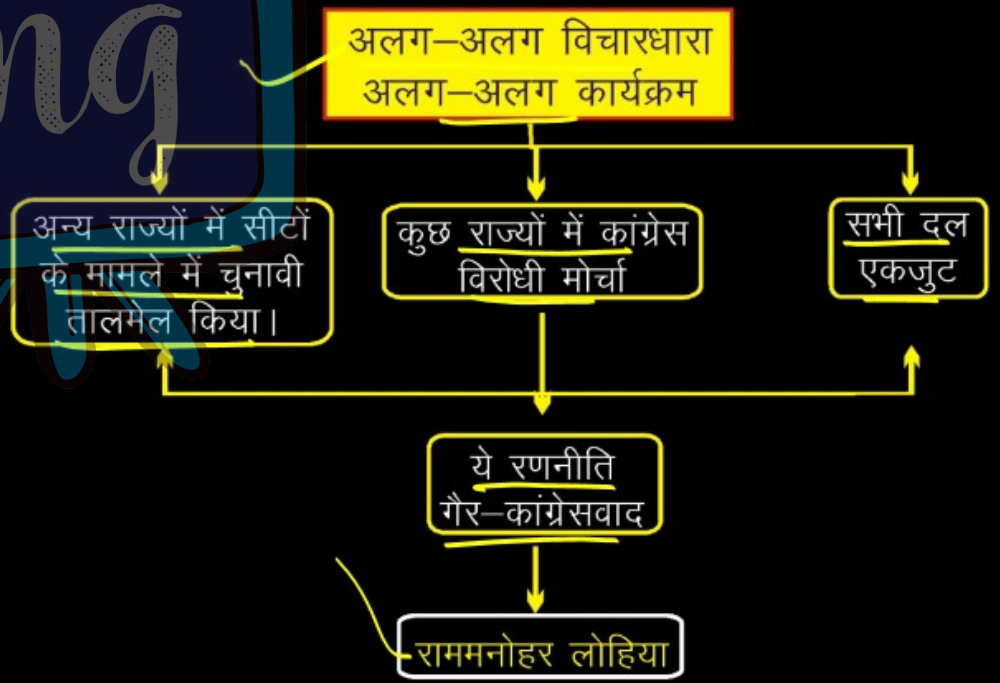
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

गैर-कांग्रेसवाद

शिल्पी - राममनोहर लोहिया
समाजवादी नेता

- विपक्षी दल उठ रहे जनविरोध की अगुवाई कर रहे थे।
- कांग्रेस की विरोधी पार्टियों ने महसूस किया कि उनके वोट बंट जाने के कारण ही कांग्रेस सत्तासीन है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने इस 'गैर-कांग्रेसवाद' के पक्ष में सैद्धांतिक तर्क दिये।
- कांग्रेस का शासन अलोकतांत्रिक और गरीब लोगों के हितों के खिलाफ।
- इसलिए गैस कांग्रेसी दलों को एक साथ आना जरूरी।
- ताकि गरीबों के हक में लोकतंत्र को वापस लाया जा सकें।



Under CSR Support by ipca | Foundation

चुनावों का जनादेश

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

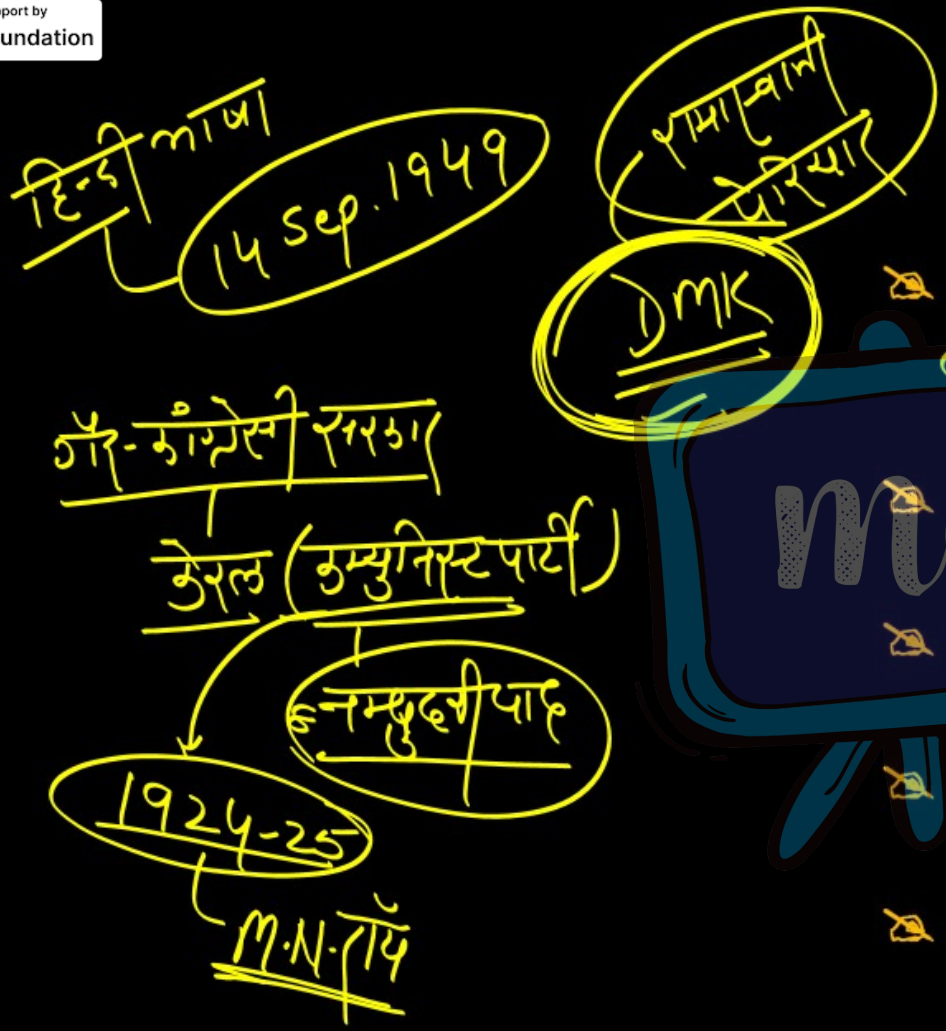
फरवरी 1967 में चौथे आम चुनाव

- नेहरू के बिना पहली बार कांग्रेस का सामना
- चुनाव परिणाम में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर कांग्रेस को धक्का
  - इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल के आधे मंत्री चुनाव हारे
  - जैसे–तैसे लोकसभा में बहुमत लेकिन प्राप्त सीटों एवं मतों के प्रतिशत में भारी कमी
  - 7 राज्यों में बहुमत नहीं मिला
    - दो अन्य राज्यों में दल–बदल के कारण कांग्रेस की सरकार क्यों बनीं
    - ये 9 राज्य देश के हर भाग में कायम
- राजनीतिक भूकंप की संज्ञा

२६/२०

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

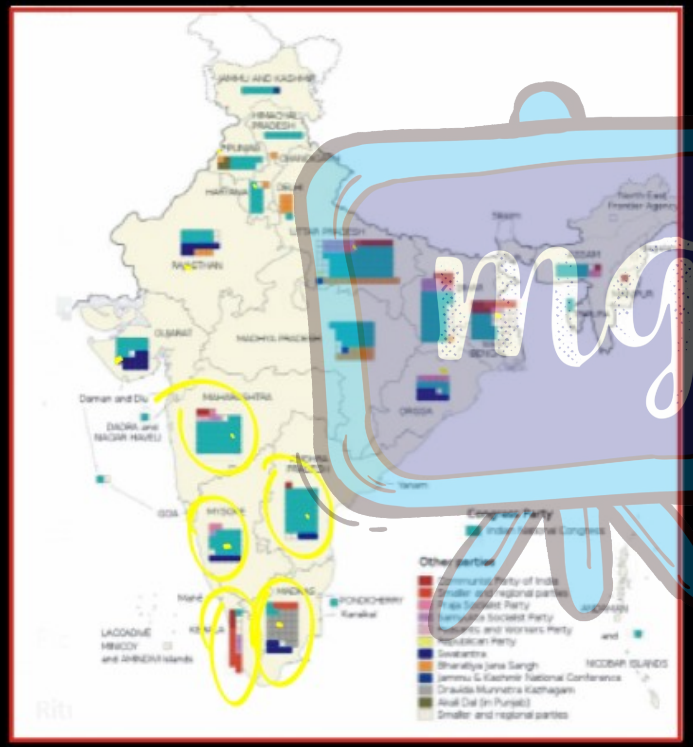


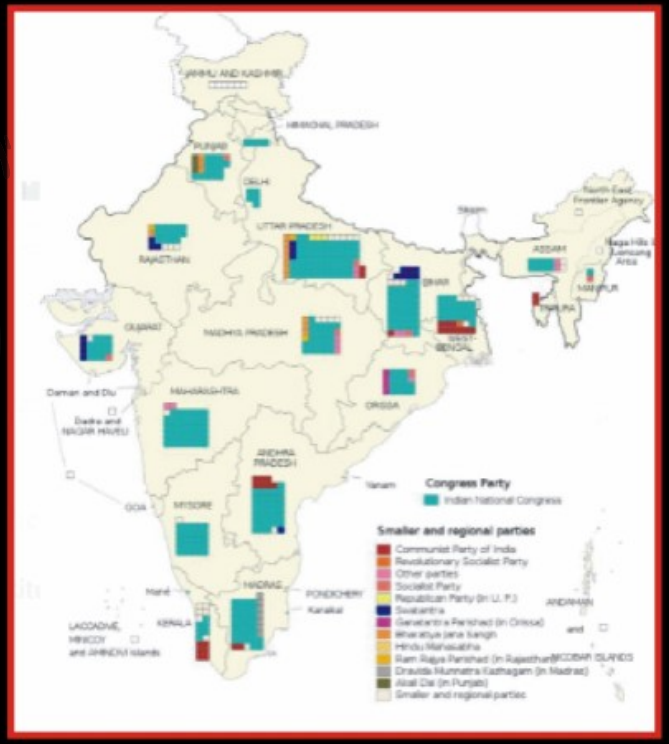
एक विचित्र अनुभव

- 'मद्रास प्रांत' में एक क्षेत्रीय पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कखगम पूर्ण बहुमत के सत्ता पाने में कामयाब रही।
- द्रविड़ मुनेत्र कखगम (1949) हिंदी विरोधी आंदोलन का नेतृत्व कर सत्ता में आई।
- यहां के घात हिंदी को राजभाषा के रूप में केन्द्र द्वारा अपने ऊपर थोपने का विरोध कर रहे थे।
- चुनावी इतिहास में पहली घटना जब किसी गैर कांग्रेसी दल को किसी राज्य में पूर्ण बहुमत मिला।
- आठ अन्य राज्यों में विभिन्न गैर- कांग्रेसी दलों की गठबंधन सरकारी बनी।
- लोग कांग्रेस को सत्तासीन देखने के अभ्यस्त थे - उनके लिए ये एक विचित्र अनुभव।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





Under CSR Support by
ipca | Foundation

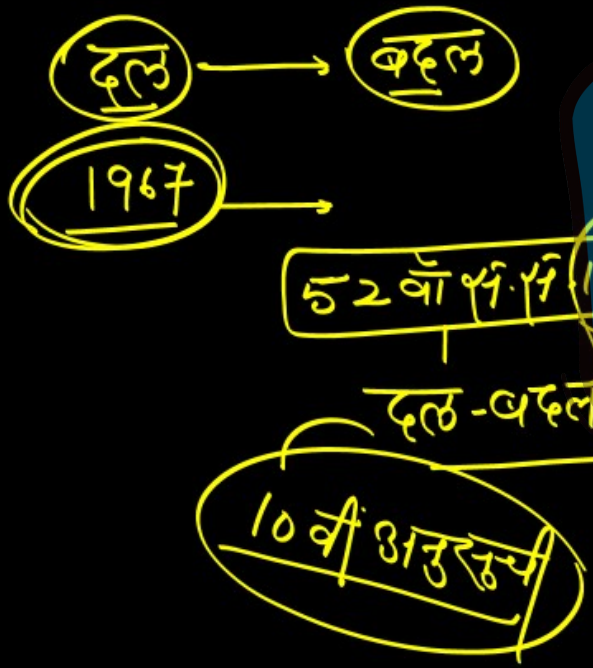
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

दल-बदल



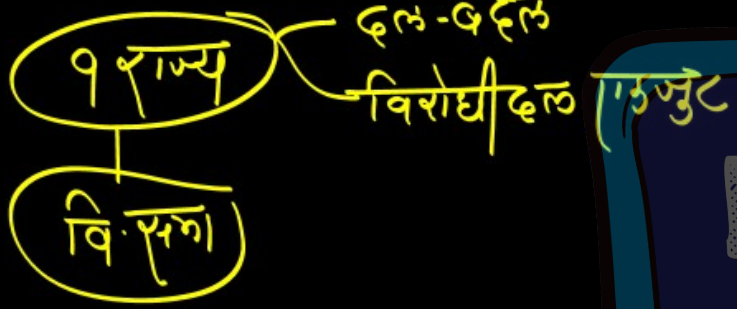
- 1967 के चुनावों की एक खास बात 'दल बदल'
- इसने राज्यों में सरकारों के बनने बिगड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दल-बदल :- कोई जनप्रतिनिधि किसी खास दल के चुनाव चिह्न को लेकर चुनाव लड़े और जीत गए और जीतने के बाद इस दल को छोड़कर किसी दूसरे दल में शामिल हो जाये।

- 1967 के आम चुनावों के बाद कांग्रेस को छोड़ने वाले विधायकों ने तीन राज्यों - हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में गैर कांग्रेसी सरकारों को बहाल करने में अहम् भूमिका निभायी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- 1967 में कांग्रेस की सत्ता कायम रही, लेकिन उसे पहले जितना बहुमत हासिल नहीं था।
- अन्य राज्यों में भी इस पार्टी के हाथ से सता जाती रहीं।
- चुनाव के नतीजों ने ये साबित कर दिया कि कांग्रेस को हराया जा सकता है।
- लेकिन अब भी कांग्रेस का कोई विकल्प नहीं था।
- राज्यों में बनी अधिकतर गैर-कांग्रेसी गठबंधन की सरकारें ज्यादा दिनों तक नहीं टिक पायी।